काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 92वें दीक्षान्त समारोह पर माननीय कुलपति का स्वागत भाषण

07 मार्च 2010

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के 92वें दीक्षात समारोह के मुख्य अतिथि एव मानव संसाधन मंत्री श्री कपिल सिब्बल जी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलाधिपति परम सम्माननीय डॉ0 करन सिंह जी, माननीय रेक्टर महोदय, विश्वविद्यालय विद्वत परिषद् कार्यकारिणी एवं कोर्ट के माननीय सदस्य गण, कुल सचिव एवं अन्य अधिकारी गण, शिक्षक वृन्द, विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्य, मीडियाकर्मी, आज के दीक्षांत समारोह में उपाधि ग्रहण करने वाले प्रिय छात्र एवं छात्राएं, सम्मानित अतिथिगण, देवियों एवं सज्जनों।

दीक्षांत समारोह के इस पावन पर्व पर स्वागत उद्बोध करते हुए मुझे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की गौरवशाली परम्पराओं का सहज बोध हो रहा है। वर्ष 1919 के दीक्षांत के पहले समारोह से लेकर आज तक इस अवसर पर अनेक असाधारण शिक्षाविद्ों एवं महापुरुषों ने यहाँ उद्बोधन दिया है। इनमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय (Rashtra Pita Mahatma Gandhi, Dr Rajendra Prasad एवं अग्रगणीय शिक्षाविद् डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन जैसे युगपुरुष भी रहें हैं।

आज दीक्षांत समारोह के इस अवसर पर अपने मध्य मुख्य अतिथि के रुप में मानव संसाधन विकास मंत्री श्री कपित सिब्बल को पाकर हमें अतिशय संतोष की अनुभूति हो रही है। 21वीं शताब्दी में उभर रहे ज्ञान समाज में भारतीय शिक्षा व्यवस्था को किस तरह से समाहित किया जाये ताकि वह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने श्रेष्ठतम् स्वरुप के साथ उभर सके, इस दिशा में श्री कपित सिब्बल का ऊर्जापूर्ण नेतृत्व हम सभी के लिए सौभाग्य का विषय है। हम उनका काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हार्दिक (तहे दिल से) स्वागत करते हैं। इस दीक्षांत समारोह में कुलाधिपति डॉ0 करन सिंह का संरक्षण एवं आशीर्वाद हमें प्राप्त हो रहा है। पिछले अनेक दशकों से आपका मार्ग दर्शन एवं नेतृत्व हमें अनेक स्तरों पर मिलता रहा है, जिससे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय कभी उऋण नहीं हो सकता। आप दोनों का मैं काशी हिन्दू विश्वविद्यालय परिवार एवं काशी नगरी के समस्त नागरिकों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की विद्वत् परिषद्, कार्यकारिणी परिषद् एवं कोर्ट के माननीय सदस्यों का, विश्वविद्यालय परिवार के एवं बाहर से आये अन्य शिक्षक वृन्द का, अन्य सम्माननीय अतिथियों, मीडिया जगत के प्रतिनिधिगण एवं नगर के गणमान्य नागरिकों, देवियों और सज्जनों का भी मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। आज जिन प्रिय विद्यार्थियों को उपाधि, पदक एवं अन्य पुरस्कार प्राप्त होने हैं उनको भी इस अवसर पर शुभकामनायें देता हूँ।

माननीय मुख्य अतिथि महोदय,

जैसा आपको विदित है, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मालवीय जी की दूरदर्शिता और देशभक्ति का जीवन्त संदर्श है। मालवीय जी इस विश्वविद्यालय को मात्र उपाधि देने वाली संस्था के रूप में नहीं देखते थे बल्कि उनका उद्देश्य एक ऐसी आदर्श शिक्षण संस्था का निर्माण करना था, जो भारत की मेधा का अधुनातन वैश्विक प्रवृत्तियों के साथ समन्वय कर सके। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह मालवीय जी भी चाहते थे कि ज्ञान एवं विज्ञान के सद्विचार सभी दिशाओं से भारतवर्ष में आए, ताकि परिवर्तन के इस युग में हम सभी राष्ट्रों एवं संस्कृतियों के साथ समवेत् विकास कर सकें। इसी प्रगतिशील प्रतिबद्धता ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राचीन एवं नवीन का, प्राची एवं प्रतीची, मानविकी एवं अभियांत्रिकी का एक अप्रतिम प्रतिरूप प्रस्तुत किया।

लेकिन काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अपने अतीत के गौरव में ही नहीं सीमित रहा। जैसे–जैसे भारत एक राष्ट्र के रूप में पल्लवित हुआ वैसे ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय भी उभरती हुई चुनौतियों को स्वीकारते हुए राष्ट्र के निर्माण में शिक्षा के माध्यम से अपना योगदान करता गया। इस बौद्धिक यात्रा में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के जीवन्त योगदान को अनेक उन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कीर्तिमानों में देखा जा सकता है, जिन्हें यहाँ के छात्रों एवं शिक्षकों ने विज्ञान एवं मानवीकीय के क्षेत्रों में लगातार अर्जित किया।

माननीय मंत्री जी

मुझे विश्वास है कि आपके सबल नेतृत्व में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय अपने गौरवपूर्ण अतीत को दुहराते हुए अपने वर्तमान और भविष्य को महत्वपूर्ण उपलब्धियों से परिपूर्ण कर सकेगा। युग परिवर्तन के इस दौर में जहाँ हम विज्ञान एवं प्राद्यौगिकीय की नवीनतम विधाओं में प्रावीण्य प्राप्त कर रहें हैं, वहीं दूसरी ओर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को हम हिंसा एवं पर्यावरण जैसी वैश्विक समस्याओं के समाधान परक विश्लेषण करने वाली प्रयोगशालाओं की तरह भी बनाना चाहते हैं। हमें विश्वास है कि अध्यापन एवं शोध की नये परिप्रेक्ष्य आत्मसात करने में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एक अग्रगणीय संस्था के रुप में उभर सकेगा।

दीक्षांत समारोह में उपस्थित गणमान्य अतिथिगण, माननीय शिक्षक वृन्द, प्रिय छात्र एवं छात्राओं, भाइयों एवं बहनों

मैं एक बार पुनः आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। मुझे विश्वास है कि आप सभी का स्नेह और आशीर्वाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय को अनवरत मिल सकेगा। ताकि यह विश्वविद्यालय अपने उच्च आदर्शों के अनुकूल नयी ऊँचाईयों को छू सके एवं राष्ट्रीय निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अभिनीत कर सके।

जय हिन्द।